



दिसम्बर, 2016

رسول الله ﷺ

محمد

اِنَّ الْمُسْلِمِينَ مَصْبَاغُ الْهُدَى وَ سَخِيَّةُ الْاَبَاةِ



مصباح الہدی



تعمیری افکار ★
تحقیقی انداز ★
فرمودات قرآن اور تعلیمات اہل بیت
پر مشتمل مضامین پڑھنے کے لئے
مصباح الہدی اردو کے نمبر نمبر

سہ ماہی **مصباح الہدی** (اردو) کے نمبر نمبر

قیمت فی شمارہ: ۶۰ روپیہ سالانہ: ۲۰۰ روپیہ رجسٹرڈ ڈاک سے: ۳۰۰ روپیہ

مدیر اعلیٰ: سید منظر صادق زیدی | مدیر: سید محمد ثقلین جوراسی | نائب مدیر: وقار حیدر اعظمی



نئی نسل
خاص طور پر
جوانوں کے لیے
ہودا میشن کی
ہندی زبان میں
خاص پیشکش

مالا نا ممبر شپ 200/-



میرسواہل ہودا

دوماہی "میرسواہل ہودا" (ہندی) آج ہی ممبر بنیے اور ساتھیوں کو بھی بنائیے!

پریم ممبر: 40/روپیہ سالانہ: 200/روپیہ رجسٹرڈ ڈاک سے: 300/روپیہ

مکمل سंपादक: منظر صادق زیدی | سंपादक: तसदीक हुसैन रिजवी
सहायक: कुमैल असगर जैदी, अली अमीर रिजवी

Huda Mission

Office : Shafaat Market
Zehra Colony, Muftiganj, Lucknow

हदी मशन

آفس: شفاعت مارکیٹ زہرا کالونی، مفتی گنج لکھنؤ

Mob: +91-9415090034, 9451085885, 9389830801, 9936193817



اَلسَّلَامُ عَلَیْكُمْ

فہرست

1. جنت کی خدک
2. کورانی کچی
3. پستیوں کا سبک
4. خوبسورت ترین فیل
5. شیکسٹ کا آغا
6. سادیک-ا-آلہ محمد
7. شرف کی کہانی (2)
8. بہترین درس
9. چارے نبی ص 00
10. لکھی

اَلَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ طوبیٰ لَهُمْ وَحَسُنَ مَا يَفْعَلُونَ



دسمبر، 2016 جلد-7، شمارہ-1

یادگار:

مولانا محمد املی آسیف تابا سرا

ایڈیٹوریل بورڈ:

مولانا تاسدیق حسین صاحب، مولانا سیددول حسن صاحب
مولانا کومل اسگر صاحب

ایڈیٹر:

سید منظر صادق زیدی

سب ایڈیٹر:

سید منظر صادق زیدی

آرٹ و ڈیزائن:

imagine
We Fix Imagination
9839099435

Annual Subscription
only Rs. 300/-

Published by:

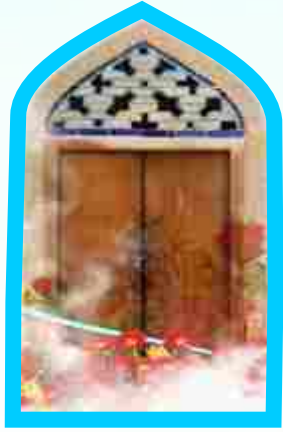
Huda Mission

Head Off.: Vill. Ghazipur, P.O. Gogwan,
Distt. Muzaffarnagar, U.P. India

Lucknow Office: Shafaat Market
Zahra Colony, Muftiganj, Lucknow-3 (U.P.) INDIA
Mob.: 9415090034, 9451085885

E-mail: tubamonthly@gmail.com





جنت کی کھڑکی

امام جعفر صادق (ع) فرماتے ہیں:
ہجرت امام جعفر صادق (ع) ۱۰۸۰ھ فرماتے ہیں

صِلْ مَنْ قَطَعَكَ

جو تم سے رابطہ توڑے اس سے رابطہ جوڑو

جو تم سے رابطہ توڑے اس سے رابطہ جوڑو

وَأَعْطِ مَنْ حَرَمَكَ

جو تمہیں محروم کرے اسے عطا کرو

جو تمہیں محروم کرے اسے عطا کرو

أَحْسِنْ إِلَى مَنْ أَسَاءَ إِلَيْكَ

جو تم سے برائی سے پیش آئے اس سے نیکی سے پیش آؤ

جو تم سے بُرائی سے پیش آئے اس سے نیکی سے پیش آؤ

سَلِّمْ عَلَى مَنْ سَبَّكَ

جو تمہیں گالی دے تم اسے سلام کرو

جو تمہیں گالی دے تم اسے سلام کرو

وَأَنْصِفْ مَنْ خَاَصَمَكَ

اور جو تم سے دشمنی کرے اس سے انصاف سے پیش آؤ

اور جو تم سے دشمنی کرے اس سے انصاف سے پیش آؤ

اعْفُ عَمَّنْ ظَلَمَكَ

جو تم پر ظلم کرے اسے معاف کر دو

جو تم پر ظلم کرے اسے معاف کر دو



کُورْآنی Quiz

پیارے بچو!

ہم نے آپ کے لیے دلچسپ سلسلہ شروع کیا ہے۔
اس QUIZ کو خود حل کرنے کی کوشش کریں۔ اس کویز کو
حل کرنے سے جہاں تمہاری مالومات میں اضافہ ہوگا وہیں کورْآن
کی تلافی کا سوا بھی ملے گا۔ اپنے جوابات "توا" کے
دفتر روانہ کریں۔ آپ اپنے جواب ई-میل و SMS کے
ذریعے بھی بھیج سکتے ہیں۔ سہی جواب دینے والوں کو انعام دیا
جائے گا۔

SMS On
09415090034, 09890500072, 09451084885
E-mail: tubamonthly@gmail.com

- سورہ شفاء کون سے نمبر کا سورہ ہے اور اس میں کتنی آیات ہیں؟
☐ (1) 91, 15 ☐ (2) 113, 5 ☐ (3) 99, 8 ☐ (4) 107, 6
- "اور دن کی قسم جب وہ روشنی بکھرے" کس سورہ کی کون سی آیات کا ترجمہ ہے؟
☐ (1) سورہ زلزال ساتویں آیات ☐ (2) سورہ بروج پہلی آیات
☐ (3) سورہ شمس تیسری آیات ☐ (4) سورہ اسر پہلی آیات
- سورہ شمس میں اللہ نے کس کے ہاتھ ٹوٹنے کے بارے میں کہا ہے؟
☐ (1) ابولہب کے ☐ (2) جینا کے
☐ (3) شیتان کے ☐ (4) کافروں کے
- "اس کی ن کوئی اولاد ہے اور ن والید" کس سورہ کی کون سی آیات کا ترجمہ ہے؟
☐ (1) سورہ شمس چوتھی آیات ☐ (2) سورہ قدر پہلی آیات
☐ (3) سورہ زلزال تیسری آیات ☐ (4) سورہ آلہ چودھویں آیات
- سورہ شمس کورْآن کے کس نمبر کا سورہ ہے؟
☐ (1) 114 ☐ (2) 110 ☐ (3) 91 ☐ (4) 97
- خدا نے کس سورہ میں شتر کے سینیٹ کی قسم کھائی ہے؟
☐ (1) سورہ فجر ☐ (2) سورہ تین ☐ (3) سورہ تارک ☐ (4) سورہ شمس
- کس سورہ میں خداوند نے کہا ہے کہ شہر حور کے بربادی ہے؟
☐ (1) سورہ انفطار ☐ (2) سورہ اسر ☐ (3) سورہ فجر ☐ (4) سورہ ہما
- "وہا انکی چال کو بے کار نہی کر دیا" کس سورہ کی کون سی آیات ہے؟
☐ (1) سورہ فیل دوسری آیات ☐ (2) سورہ آلہ پہلی آیات
☐ (3) سورہ تارک آٹویں آیات ☐ (4) سورہ انفطار پہلی آیات



سامنے वाली तस्वीर को देखकर रंग भरो



برے القاب (نام)

बुरे अलकाब (नाम)

وَلَا تَنَابَزُوا بِالْأَلْقَابِ

حجرات - 11

हुजरात - 11

آية

ایک دوسرے کو برے القاب (ناموں) سے مت پکارو

एक दूसरे को बुरे अलकाब (नामों) से मत पुकारो

ترجمہ

تर्जुमा



खूबसूरत तरीन फूल

पुराने ज़माने की बात है हेजाज़ की सर ज़मीन पर (जिसे आज कल साउदी अरब कहते हैं) एक शहर है जिसका नाम मक्का है। वहाँ के रहने वाले लोग क़बीलए कुरैश के नाम से मशहूर थे अरबों के तमाम क़बीले क़बीलए कुरैश की बहुत इज़्ज़त किया करते थे उस क़बीले के सरदार का नाम अब्दुल मुत्तलिब था।

जनाबे अब्दुल मुत्तलिब के दस बेटे थे उनमें से एक का नाम अब्दुल्लाह था वह सबसे ज़ियादा खूबसूरत रहम दिल और बहादुर थे वहाँ के सब लोग उनकी नेकियों और अच्छी आदतों की वजह से उनसे बहुत मुहब्बत किया करते थे जनाबे अब्दुल मुत्तलिब भी अपने उस बेटे को दूसरों के मुकाबले में बहुत ज़ियादा चाहते थे जब जनाबे अब्दुल्लाह जवान हुए तो जनाबे अब्दुल मुत्तलिब ने उस ज़माने की बेहतरीन लड़की के

साथ उनकी शादी करदी जिनका नाम बीबी आमेना था।

उस दौर में लोग काफ़लों की सूरत में सफ़र किया करते थे एक दिन जनाब अब्दुल्लाह ने बीबी आमेना को बताया कि वह तिजारत के लिये एक काफ़ले के साथ शाम जा रहे हैं बीबी आमेना ने जनाबे अब्दुल्लाह का सामान तय्यार करने में मदद की और फिर जनाबे अब्दुल्लाह बीबी आमेना को खुदा हाफ़िज़ कहकर अपने ऊँट पर सवार हो गये और शाम की तरफ़ रवाना हो गये।

कुछ महीनों बाद वह काफ़ला शाम का सफ़र तय करके वापस आ गया जब लोगों को काफ़ले के आने की ख़बर मिली तो सब लोग उसके इस्तक़बाल के लिये पहुँच गये बीबी आमेना भी अपने शौहर जनाबे अब्दुल्लाह के



इस्तक़बाल के लिये आयी थीं लेकिन उन्हें वह कहीं नज़र नहीं आये जब उन्होंने काफ़ले वालों से अब्दुल्लाह के बारे में पूछा तो उन्होंने बताया कि जनाबे अब्दुल्लाह आते हुये बीमार हो गये और इस दुनिया से रुख़सत हो गये हैं।

बीबी आमेना को अपने शौहर की मौत का बहुत दुख: हुआ और आप बहुत दिनों तक रोती रहीं वह बहुत ग़मज़दा रहती थीं लेकिन अब वह अपने बच्चे की विलादत का इन्तेज़ार कर रही थीं जब बच्चे की विलादत का वक़्त नज़दीक आया तो बीबी आमेना बड़ी परेशान हुयीं क्योंकि उनकी मदद करने वाला कोई नहीं था उन्होंने थोड़ी देर के लिये आँखें बन्द करलीं जब आँखें खोलीं तो यह देखकर हैरान रह गयीं कि उनके कमरे में हर तरफ़ नूर फैला हुआ है बहुत से फ़रिश्ते और हूरें आसमान से ज़मीन पर आयी हुयी थी बीबी आमेना उनको देखकर बहुत खुश हुयीं और उन्हें बहुत सुकून मिला जब उनकी परेशानी कम हुयी तो उनको नींद आने लगी इसी दौरान बीबी आमेना का फरज़न्द दुनिया में आ गया।

फरिश्तों ने उस बच्चे को एक जन्नत के बर्तन में गुलाब से गुस्ल दिया और एक साफ़ कपड़े में लपेट कर बीबी आमेना के पास लिटा दिया बीबी आमेना ने अपने बेटे की तरफ़ मुहब्बत भरी निगाहों से देखा और प्यार से उसके गालों पर हाथ फेरा और रुख़साराँ पर प्यार किया बच्चे का बदन खुशबू में बसा हुआ था बीबी आमेना को आज अब्दुल्लाह बहुत याद आ रहे थे लेकिन वह अपने बच्चे को देखकर मुतमइन थीं और उससे

बातें कर रहीं थीं।

जब जनाबे अब्दुल मुत्तलिब को पोते की विलादत की ख़बर मिली तो उनकी आँखों में खुशी के आँसू आ गये वह फौरन अपने पोते को देखने के लिये बीबी आमेना के कमरे के अन्दर दाखिल होकर बच्चे को गोद में लिया और उसे प्यार करके कहने लगे यह तो अपने बाप अब्दुल्लाह से ज़ियादा खूबसूरत है।

मक्के के लोगों को जब जनाबे अब्दुल्लाह के बेटे की विलादत के बारे में मालूम हुआ तो वह उसे देखने के लिये आने लगे जो भी उस बच्चे को देखता वह कहता। इसके चेहरे पर कितना नूर है, इसके बदन से कितनी अच्छी खुशबू आती है, जनाबे अब्दुल मुत्तलिब को तो ऐसे पोते पर फ़ख़ होना चाहिये।

जनाबे अब्दुल मुत्तलिब ने अपने पोते की विलादत पर बहुत खुशियाँ मनायीं और ग़रीबों को खाना खिलाया कई दिनों तक ग़रीब लोग उनके दस्तरखान पर खाना खाते रहे सातवें दिन बच्चे का नाम रखने के लिये सब लोग जनाबे अब्दुल मुत्तलिब के पास जमा हो गये वह देखना चाहते थे कि जनाबे अब्दुल मुत्तलिब अपने पोते का क्या नाम रखते हैं इस लिये जनाबे अब्दुल मुत्तलिब ने मुस्कुराकर कहा मैं इसे मोहम्मद (काबिले तारीफ़) कहकर पुकारूँगा।

यह सुनकर एक शख्स बोला: मोहम्मद ऐसा नाम तो आज तक किसी अरब ने नहीं रखा है।

जनाबे अब्दुल मुत्तलिब ने जवाब दिया इस लिये कि मेरे पोते जैसा काबिले तारीफ़ बच्चा आज तक पैदा ही नहीं हुआ है।





शिकस्त का आगाज़

अरब के लोग ऊँट सवारी के बहुत शौकीन हैं वहाँ आज भी ऊँटों की दौड़ को बहुत शौक से देखा जाता है और बहुत से लोग उसमें शिरकत करते हैं।

रसूल अल्लाह स०व० के ज़माने में भी ऊँटों की बड़ी अहमियत थी और तेज़ रफ़्तार ऊँटों को बड़ा कीमती समझा जाता था। रसूल अल्लाह स०व० का ऊँट भी बहुत तेज़ रफ़्तार था हर मुक़ाबले में उनका ऊँट हमेशा असहाब के ऊँटों से आगे रहता था पैग़म्बर के ऊँट को शिकस्त देना नामुमकिन था खुद अल्लाह के रसूल स०व० भी एक माहिर और चुस्त व चलाक ऊँट सवार थे।

एक दिन रेगिस्तान में रहने वाला एक अरब आदमी, ऊँट पर सवार होकर नबी अकरम स०व० के पास पहुँचा उसका ऊँट जवान था और बड़ा ताक़तवर दिखाई दे रहा था वह आदमी रसूल स०व० से कहने लगा क्या आपका ऊँट मेरे ऊँट के साथ मुक़ाबला करेगा?

वह आदमी शायद जानता था कि नबी अकरम स०व० का ऊँट दूसरे ऊँटों से ज़ियादा तेज़ दौड़ता है वह इस मुक़ाबले से सबको दिखाना चाहता था कि उसका ऊँट पैग़म्बर के ऊँट से ज़ियादा तेज़ रफ़्तार है।

हज़रत मुहम्मद स०व० ने उस आदमी की बात मानली और कुछ ही देर बाद मुक़ाबला शुरू हो गया। दोनों ऊँट पूरी रफ़्तार से दौड़ रहे थे ताकि जल्द से जल्द अपनी मंज़िल पर पहुँच जायें। हवा में धूल उड़ रही थी और तमाम

असहाब भी मुक़ाबला देख रहे थे वह लोग मुक़ाबले के नतीजे के बारे में परेशान थे क्योंकि उस आदमी का ऊँट रसूल स०व० के ऊँट से ज़ियादा जवान था जिसकी वजह से वह बहुत तेज़ी से आगे बढ़ रहा था असहाब रसूल उनसे बहुत मुहब्बत करते थे और समझते थे कि अगर पैग़म्बर स०व० का ऊँट शिकस्त खा गया तो बहुत बुरा होगा।

धूल आहिस्ता आहिस्ता बैठने लगी तो मालूम हुआ कि मुक़ाबला उस आदमी ने जीत लिया है। असहाब रसूल उस शिकस्त से काफी रंजीदा हुए लेकिन पैग़म्बर स०व० बिल्कुल भी गुमगीन नहीं थे क्योंकि हर खेल में सिर्फ़ एक शख्स जीतता है और इस तरह के खेल दोस्ताना खेल होते हैं लेहाज़ा किसी को शिकस्त की वजह से गुमगीन नहीं होना चाहिए।

हज़रत मुहम्मद स०व० एक मोअल्लिम और उसताद थे उन्होंने इस मौक़े पर अपने असहाब को एक अहेम पैग़ाम दिया पैग़म्बर अकरम स०व० ने अपने असहाब से फरमाया: यह ऊँट काफी मगरुर और धमंडी होने लगा था इस मुक़ाबले से अल्लाह ने उसे ऊँचे गुरुर से नीचे उतार दिया।

सब लोग पैग़म्बर स०व० की बातों का मतलब समझ चुके थे कि किसी को अपने ऊपर गुरुर नही करना चाहिए। अब असहाब उस शिकस्त को भूल चुके थे उस मुक़ाबले ने उन्हें यह समझा दिया था कि मगरुर होना शिकस्त का आगाज़ है।



सादिक-ए-आले मुहम्मद

रबी अब्बल की 17 तारीक़ थी मदीना के रहने वाले जोश व ख़रोश से रसूल अल्लाह स० की विलादत ब सआदत की खुशियाँ मना रहे थे लेकिन अहलेबैत-ए-रसूल स० यानी इमाम ज़ैनुल अबिदीन अ० और इमाम मुहम्मद बाकिर अ० के घर उस खुशी का रंग ही कुछ और था क्योंकि उस दिन खुदा वंदे आलम ने उस घराने की खुशियों को बढ़ा दिया था। वो एक तरफ़ तो रसूल स० की विलादत की खुशी मना रहे थे तो दूसरी तरफ़ इमाम मुहम्मद बाकिर अ० के घर में रसूल अल्लाह स० के छटे जानशीन की विलादत के मुन्तज़िर थे। इमाम सज्जाद और उनके बेटे मुहम्मद बाकिर अ० एक कमरे में बैठे हुए थे कि अन्दर से एक औरत दौड़ती हुयी आयी और बच्चे की विलादत की खबर सुनाई कुछ ही देर गुज़री थी कि सफ़ेद कपड़े में लपेट कर एक नौमौलूद नन्ने से बच्चे को इमाम सज्जाद अ० की खिदमत में लाया गया।

इमाम सज्जाद अ० ने बच्चे के चेहरे से

कपड़ा हटाया बच्चे को चेहरा देख कर आप के चेहरे मुबारक पर मुस्कुराहट आ गयी नन्ना सा बच्चा एक खूबसूरत फूल की तरह आराम से सो रहो था।

इमाम सज्जाद अ० ने अपने पोते को गोद में लिया और उसको प्यार किया फिर उसके कानों में अज़ान व अक़ामत कही और फिर बच्चे को आसमान की तरफ़ बुलन्द करके दुआ की अब बच्चे का नाम रखने की बारी थी इमाम मुहम्मद बाकिर अ० अपने वालिद के एहतेराम में ख़ामोश थे इमाम ज़ैनुल अबिदीन अ० ने फ़रमाया:

मेरे जद रसूल अल्लाह स० ने फ़रमाया था कि जब मेरा बेटा जाफ़र बिन मुहम्मद बिन अली बिन हुसैन अ० होतो उसको सादिक के नाम से पुकारना और जान लो कि जो उसकी पैरवी करेगा वो दुनिया और अख़ेरत में कामयाब होगा। चूंकी हुज़ूर स० ने आप को सादिक का लक़ब दिया है इसी लिये आप को सादिक-ए-आले मुहम्मद भी कहते हैं।





शरफू की कहानी (2)

दो दिन बीत गये तो फिर बाप ने बेटे को एक और मक़ाम का पता बताया और ताकीद की ख़बरदार! पेड़ काटने से पहले ऊपर नहीं देखना।” शरफू ने अहद (दिन में ठान लिया) कर लिया कि वह पहले की तरह ऊपर नहीं देखेगा और बाप के बताये हुए मक़ाम पर चला गया। उसे अपना वादा याद था। चुनान्चे पहले पेड़ के पास पहुँच कर उसने ऊपर न देखा। वह नीचे देखते हुए कुल्हाड़ा मारने लगा कि उसी नज़र पेड़ के नीचे उस जंगली फल पर पड़ी, जिसे बाज़ (अक्सर) लोग हाण्डी में पका कर खाते हैं।

एक सवाल ज़ेहन में उभर आया: उस पेड़ पर यह फल लगता है। मैं उसे क्यूँ नुक़सान पहुँचाऊँ? क्या उसकी शाखें काटने से उस फल का कुछ हिस्सा बर्बाद नहीं हो जायेगा? क्या यह उन लोगों के साथ ज़्यादती नहीं होगी जो उसे हाण्डी में पका कर खाते हैं?

वह देर तक उस पेड़ के नीचे बैठा रहा और सोचता रहा। उस रोज़ जब लकड़हारे ने अपने बेटे को देर से आते देखा तो उसे यकीन हो गया कि अब यह ज़रूर लकड़िया बेच कर पैसे लाया है। वह खुश हो कर बोला: “आज मेरा बेटा काफी पैसे ले कर आया है। है ना, क्यूँ शरफू?”

नहीं अब्बा जान! मैं कोई पैसा नहीं लाया।” फिर उसने बाप को पेड़ न काटने की वजह बता दी। बेटे की बात सुनते ही लकड़हारे के तन बदन में आग लग गयी।

“तो कुछ नहीं कर सकेगा। तुझे लकड़ियाँ काटकर बेचने के लिये भेजा था, पेड़ का फल देखने के लिये नहीं।”

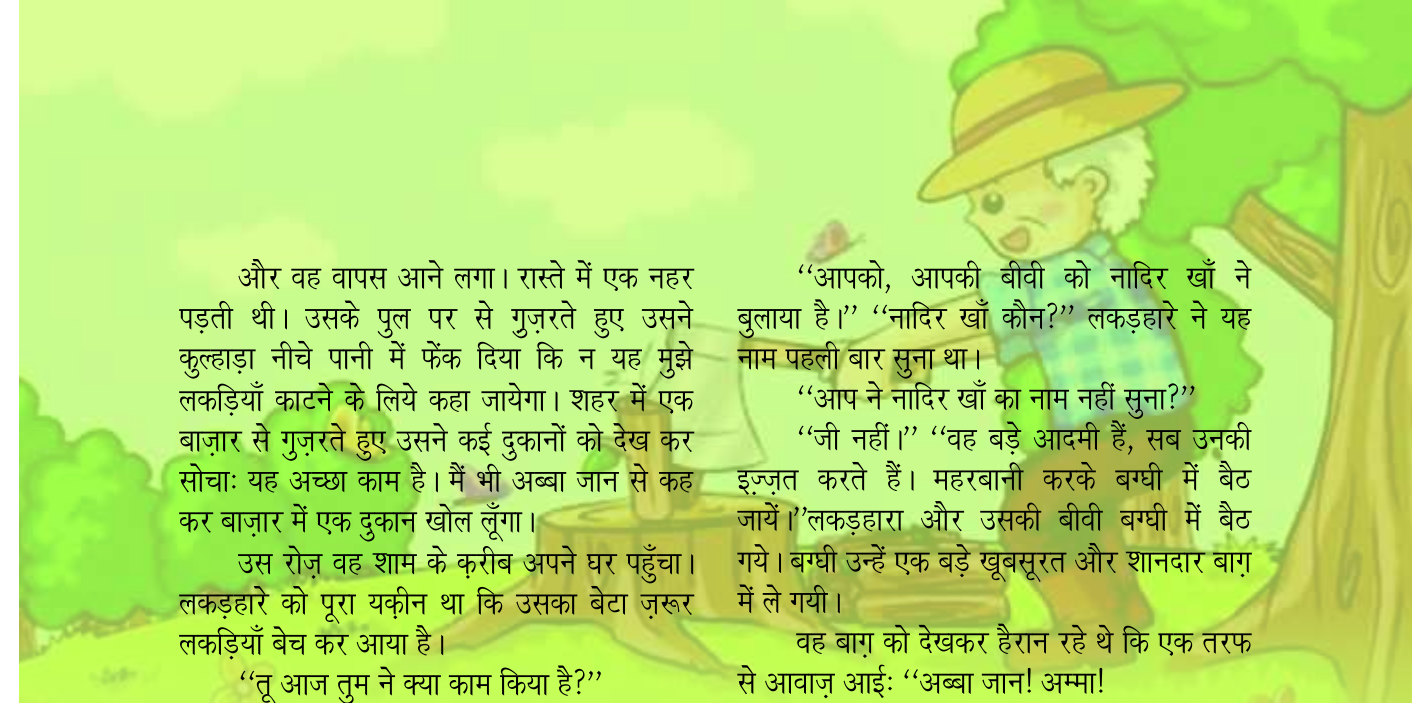
“मैं क्या करता अब्बा जान! आप जानते नहीं, लोग उस फल को पका कर खाते हैं।”

बाप गरजा: “तो तुम्हें क्या? लोग फल पका कर खाते हैं, तुम तो नहीं।”

“अब्बा जी! वह लोग भी तो हमारे जैसे हैं ना।” लकड़हारे का गुस्सा बढ़ता जा रहा था कि उसकी बीवी ने फिर उसे समझाया: “बस अब और कुछ न कहो। मुझे उम्मीद है, शरफू सीधे रास्ते पर आ जायेगा।”

लकड़हारा बोला: “अब के मैं बर्दाश्त कर लेता हूँ। आइन्दा उसने ऐसी बेहूदा हरकत की तो मैं उसे घर से निकाल दूँगा।”

कुछ दिन बीत गये। लकड़हारे ने इस मर्तबा पुराने दरख्तों (पेड़ों) का पता बताकर कहा: “खबरदार! अब के कोई बहाना न बनाना, पैसे ले कर घर आना।” शरफू जंगल में गया। उसने पुराने पेड़ देखे। बहुत बूढ़े हो चुके थे। उन्हें देख कर वह सोचने लगा: उन्होंने बरसों तक मुसाफिरों के लिये ठंडे साये मुहैया किये हैं। थके हुए लोग उनके नीचे बैठ कर सुकून हासिल करते रहे हैं। उन्हें काटना इन्सान के उन मोहसिनों का एहसान मानने के बजाये उन पर उल्टा जुल्म नहीं होगा?



और वह वापस आने लगा। रास्ते में एक नहर पड़ती थी। उसके पुल पर से गुज़रते हुए उसने कुल्हाड़ा नीचे पानी में फेंक दिया कि न यह मुझे लकड़ियाँ काटने के लिये कहा जायेगा। शहर में एक बाज़ार से गुज़रते हुए उसने कई दुकानों को देख कर सोचा: यह अच्छा काम है। मैं भी अब्बा जान से कह कर बाज़ार में एक दुकान खोल लूँगा।

उस रोज़ वह शाम के करीब अपने घर पहुँचा। लकड़हारे को पूरा यकीन था कि उसका बेटा ज़रूर लकड़ियाँ बेच कर आया है।

“तू आज तुम ने क्या काम किया है?”

बाप का यह सवाल सुन कर शरफू बोला: “अब्बा जान! पेड़ तो मैं नहीं काट सका। वह सारी उम्र मुसाफिरों को ठंडें साये देते रहे हैं। मैंने सोच लिया है कि बाज़ार में दुकान पर बैठा करूँगा।”

बेटे के मुँह से जैसे ही ये लफज़ निकले लकड़हारा अपने गुस्से पर क़बू न रख सका और उसे उसी वक़्त घर से निकाल दिया। माँ ने दखल देख चाहा तो लकड़हारे ने उसे भी झड़क दिया: “बस-बस अब तुम एक लफज़ नहीं कहोगी।”

शरफू घर से निकल कर चलने लगा। उसका कोई ठिकाना तो था नहीं। कहाँ जा सकता था? चलता गया, चलता गया, यहाँ तक कि इस क़दर थक गया कि उसके लिये एक क़दम उठाना भी मुश्किल हो गया था। करीब ही एक बड़ी शानदार हवेली थी। वह उसके दरवाज़े पर गिर पड़ा और बेहोश हो गया।

इधर लकड़हारा और उसकी बीवी अपने बेटे की जुदाई में तड़प रहे थे। लकड़हारा बुरी तरह पछता रहा था कि उसने बेटे को घर से क्यूँ निकाल दिया था। एक दिन दोनों बैठे बेटे की बातें याद करके रो रहे थे कि उनके मकान के आगे एक बग्घी रुकी। उस में से एक शख्स उतरा और लकड़हारे के दरवाज़े पर दस्तक देने लगा।

“क्यूँ जनाब! क्या बात है?” लकड़हारे ने दरवाज़ा खोल कर उस आदमी से पूछा।

“आपको, आपकी बीवी को नादिर खाँ ने बुलाया है।” “नादिर खाँ कौन?” लकड़हारे ने यह नाम पहली बार सुना था।

“आप ने नादिर खाँ का नाम नहीं सुना?”

“जी नहीं।” “वह बड़े आदमी हैं, सब उनकी इज़्ज़त करते हैं। महरबानी करके बग्घी में बैठ जायें।” लकड़हारा और उसकी बीवी बग्घी में बैठ गये। बग्घी उन्हें एक बड़े खूबसूरत और शानदार बाग़ में ले गयी।

वह बाग़ को देखकर हैरान रहे थे कि एक तरफ से आवाज़ आई: “अब्बा जान! अम्मा!

“अरे शरफू!”

लकड़हारा और उसकी बीवी अपने बेटे को देखकर हैरान हो गो। शरफू ने उम्दा किस्म का लिबास (कपड़ा) पहन रखा था और बहुत खुश लगता था।

“तुम यहाँ कहाँ?

शरफू की माँ ने पूछा।

शरफू कहने लगा: “अम्मा! उस शाम जब अब्बा जान ने मुझे घर से निकाल दिया था तो मैं थक कर एक हवेली के दरवाज़े पर गिर पड़ा। उस हवेली के मालिक नादिर खाँ हैं। जिन्होंने यह देख कर कि मुझे पेड़ों और परिन्दों से बड़ी मुहब्बत है, अपने इस बाग़ का माली बना दिया है। वह हैं मेरे मोहसिन।”

नादिर खाँ करीब आ गये और कहने लगे: “वाकई शरफू की इस बात ने मुझे बहुत मुतअस्सिर किया था कि उसे पेड़ों का बड़ा ख्याल है। पेड़ों से मुहब्बत करता है। मैंने उसे अपने बाग़ के पेड़ों की रखवाली का काम सुपुर्द कर दिया है। वह यहाँ नये-नये पेड़ लगायेगा और उनकी हिफाज़त करेगा, उसने पेड़ों से मुहब्बत की है और पेड़ों ने उस मुहब्बत कर यह बदला दिया है।”

शरफू के इसरार पर उसके माँ बाप भी वहीं रहने लगे और खुशी-खुशी ज़िन्दगी बसर करने लगे।





बेहतरीन दर्श

तीन भाई एक आदमी को अमीरुल मोमनीन हज़रत अली अलै० के पास लेकर आए और कहने लगे कि इसने हमारे बाप का क़त्ल किया है, हज़रत अली अलै० ने उस आदमी से पूछा तूने ऐसा क्यों किया है?

वह आदमी अर्ज़ करने लगा हुज़ूर मैं एक चरवाहा (जानवर चराने वाला) हूँ। भेड़ बकरी ऊँट चराता हूँ, मेरे एक ऊँट ने इन लोगों के वालिद के बाग़ में पेड़ के टैने खाना शुरू कर दिये तो इनका वालिद उठा और मेरे ऊँट को एक पत्थर दे मारा पत्थर इतना जोर से मारा था कि ऊँट मौके पर ही मर गया जब मैंने यह हालत देखी तो मुझे बहुत गुस्सा आया जिसकी वजह से मैंने वही पत्थर उस आदमी के सिर पर दे मारा और बदकिस्मती से वह आदमी भी वहीं पर मर गया।

हज़रत अली अलै० ने फ़रमाया: तुमने एक आदमी का क़त्ल किया है इस लिये मुझे तुझपर हद जारी करनी होगी यानी तुमको सज़ा देनी होगी वह आदमी कहने लगा: मौला मुझे तीन दिन की मोहलत दे दें मेरा बाप मर चुका है और विरासत में मेरे और मेरे छोटे भाई के लिये ख़ज़ाना छोड़ गया है अगर मैं मार दिया जाता हूँ तो वह ख़ज़ाना भी तबाह हो जाएगा और मेरा भाई भी।

हज़रत अली अलै० फ़रमाने लगे ठीक है लेकिन तेरी ज़मानत कौन देगा? उस आदमी ने लोगों की तरफ़ नज़र दौड़ाई तो उसकी नज़र जनाबे अबूज़र पर पड़ी कहने लगा यह आदमी मेरी ज़मानत देगा।

हज़रत अली अलै० ने फ़रमाया: ऐ अबूज़र क्या तुम इस शख्स की ज़मानत कुबूल करते हो? अबूज़र ने अर्ज़ किया जी हाँ मैं इसकी ज़मानत लेने के लिये

तय्यार हूँ।

हज़रत अली अलै० ने फ़रमाया: तुम इसे जानते तक नहीं और अगर यह भाग जाए तो फिर सज़ा तुमको मिलेगी अबूज़र ने अर्ज़ किया फिर भी मैं इसकी ज़मानत लेता हूँ या अमीरुल मोमनीन।

वह आदमी चला गया पहला, दूसरा, तीसरा यहाँ तक कि तीन दिन गुज़र गये सब लोगों को अबूज़र की फ़िक्र होने लगी कि कहीं इनको सज़ा न मिल जाए आख़िर कार तीसरे दिन मग़रिब के वक़्त वह आदमी बहुत थका मांदा वापस आ पहुँचा, अमीरुल मोमनीन हज़रत अली अ० के पास पहुँच कर कहने लगा: मैंने ख़ज़ाना अपने भाई को दे दिया और अब आप के हुक्म के आगे सर झुकाता हूँ। मुझ पर हद जारी कर दीजिये यानी सज़ा दे दीजिये इमाम अली अ० फ़रमाने लगे क्या चीज़ सबब बनी जो तुम वापस लौट आये जब के तुम आज़ाद थे और भाग भी सकते थे?

वो आदमी कहने लगा मुझे डर था की कहीं वादे की वफ़ा लोगों के दरमियान से ख़त्म न हो जाए। हज़रत अली अ० ने हज़रत अबूज़र से सवाल किया अच्छा तुम बताओ तुमने कैसे उसकी ज़मानत ले ली थी। अबूज़र कहने लगे मुझे खौफ़ हुआ के कही नेकी और अच्छाई लोगों से मिट न जाये क़त्ल होने वाले के बेटे उस वाक्ये से इतना मुतआसिर हुए के कहने लगे हम भी अपने बाप का बदला उस शख्स से नहीं लेंगे। हज़रत अली अ० ने उनसे मालूम किया तुम लोग क्यों ऐसा कर रहे हो? वह कहने लगे हमें डर है कि कहीं बक्शिश यानी माफ़ करने की सिफ़त लोगों के दरमियान से न चली जाये।



प्यारे नबी स०व०

क़रीब से गुज़रते तो प्यार से उनको सलाम करने में पहल करते थे आप स०व० ने बच्चों की अहमियत को वाज़े करते हुए फ़रमाया कि वह शख्स हममें से नहीं जो बच्चों पर रहम न करे।

माशाअल्लाह आप तीनों को कल वाली तमाम बातें याद हैं अब मैं आपको नबी करीम स०व० के बारे में कुछ और बातें बताती हूँ ग़ौर से सुनोगे और इस पर अमल भी करोगे वादा करो दादी ने कहा: जी दादी जान वादा करते हैं, बच्चों ने मिलकर कहा दादी ने कहा सुनो कुपफ़ारे मक्का अगरचे नबी करीम स०व० के बदतरनीन दुश्मन थे फिर भी वह आप स०व० को सादिक और आमिन के लक़ब से पुकारते थे, आप स०व० ने कभी झूठ नहीं बोला और सच बोलने की ताकीद फ़रमायी आप स०व० ने इरशाद फ़रमाया कि सच्चाई निजात दिलाती है और झूठ हलाकत में डालता है, आप स०व० को झूठ से सख़्त नफ़रत थी आप स०व० बचपन से ही झूठ बोलने वालों से मिलना जुलना पसन्द नहीं करते थे।

प्यारे बच्चों गाली देना भी बहुत बुरी आदत है अल्लाह और उसके नबी स०व० ने फ़रमाया मुसलमान वह है जिसके हाथ और ज़बान से दूसरे मुसलमान महफूज़ रहें नबी करीम स०व० बे इन्तेहा खुश अख़लाक थे आप स०व० के मिज़ाज के भी बहुत से वाक़यात हैं अल्लाह तआला ने वह तमाम खुबियाँ और अच्छाईयाँ जो पहले अम्बिया अस० में थीं वह खुबियाँ और अच्छाईयाँ आप स०व० में जमा कर दी थीं।

प्यारे बच्चों हमें चाहिए कि हम भी आप स०व० के बातये हुए तरीके पर चलें, जिस काम को करने से आप स०व० ने मना किया है खुद भी उस काम से बचे और दूसरों को भी उस काम से बचायें इसी में हमारी दुनिया व आख़िरत की कामियाबी है।

अल्लाह तआला हमें अमल की तौफ़ीक अता फ़रमाये आमीन।

दादी जान हमें प्यारे नबी स०व० के बारे में कुछ बातें बतायें। बच्चों बताती हूँ, लेकिन कल जो बातें मैंने प्यारे नबी स०व० के बारे में आपको बतायी थीं क्या वह आप सबको याद हैं? सबने कहा जी दादी जान याद हैं नदीम आप बताओ कि इस्लाम आने से पहले अरबों की क्या हालत थी नदीम ने जवाब दिया: इस्लाम से पहले अरब में लोग बहुत सी बुराईयों में मुक्बिला थे बेटियों को पैदा होते ही ज़िन्दा दफ़न कर देते थे उनमें छोटी-छोटी बातों पर झगड़ा हो जाता जो बढ़ते-बढ़ते क़बीलों की दुश्मनी की सूरत इख़्तियार कर लेता था जो बहुत दिनों तक जारी रहता, शराब पीना, जुवा खेलना और नाच गाना उनमें आम था अल्लाह तआला ने हज़रत मुहम्मद स०व० को दुनिया में आख़री नबी बनाकर भेजा और आप पर अपनी आख़री किताब क़ुरआने मजीद को नाज़िल किया। आप स०व० ने पूरे अरब को जिहालत के अन्धेरो से निकालने के लिये एक अल्लाह की इबादत करने को कहा और दीने इस्लाम की दावत दी।

दूसरे बच्चे ज़बीर ने सवाल किया: हमारे प्यारे नबी हज़रत मुहम्मद स०व० कब और कहाँ पैदा हुए और आप स०व० के वालिदेन का क्या नाम था? दादी जान ने जवाब दिया हमारे प्यारे नबी हज़रत मुहम्मद स०व० 17 रबीअव्वल को अरब के शहर मक्का में पैदा हुए आप स०व० के वालिद का नाम हज़रत अब्दुल्लाह और वालिदा का नाम हज़रत आमिना था।

तीसरे बच्चे अमीर ने पूछा: हमारे प्यारे नबी हज़रत मुहम्मद स०व० बच्चों के साथ किस तरह पेश आते थे?

दादी जान ने जवाब दिया: बच्चों से आप स०व० बहुत मुहब्बत करते थे आप स०व० बच्चों के



اصحاب کھف کا کتا (۲)



جب میں نے یہ سنا کہ وہ لوگ ایک محفوظ جگہ کی تلاش میں ہیں، تاکہ وہاں پر پناہ لے سکیں اور خود کو چھپا سکیں۔ تو میں بہت تیزی کے ساتھ غار کی طرف دوڑا، پھر میں نے اپنی گردن اور دم ہلا ہلا کر غار کی طرف اشارہ کیا تاکہ وہ لوگ اس غار میں پناہ لے لیں۔ میں یہ سمجھ رہا تھا کہ وہ لوگ پریشانی کی وجہ سے غار کو بھول گئے ہیں۔ جب ان لوگوں نے مجھے غار کے پاس دیکھا تو انہیں بھی یاد آیا کہ چھپنے کے لئے اس سے اچھی جگہ کیا ہو سکتی ہے، اس لئے وہ لوگ غار کی طرف چل پڑے تاکہ اس غار میں پناہ لے سکیں۔ جب وہ لوگ غار کے پاس پہنچے تو پہلے انہوں نے غار کے پاس لگے ہوئے پھل کے پیڑ سے کچھ پھل کھائے اور وہاں پر موجود چشمے سے پانی پیا، پھر آرام کرنے کے لئے غار کے اندر چلے گئے۔

میں بھی غار کے سامنے رک گیا تاکہ اللہ کے ان مومن بندوں کی حفاظت کر سکوں۔ تبھی میں نے سنا کہ وہ لوگ، اللہ کی بارگاہ میں دعا کر رہے ہیں کہ اللہ انکو،

کافروں اور مشرکوں کے مقابلہ میں کامیاب کرے۔ اسی طرح ظالم بادشاہ اور اس کے فوجیوں کے ظلم و ستم سے ان کو محفوظ رکھے۔ ان لوگوں نے کافی دیر تک اللہ کی عبادت انجام دی، پھر یہ فیصلہ کیا کہ کچھ دیر سو جائیں کیونکہ بھاگ دوڑ کی وجہ سے وہ لوگ بہت تھک گئے تھے۔ وہ لوگ گہری نیند میں سو گئے۔ جب میں نے یہ دیکھا کہ وہ لوگ گہری نیند میں سو گئے ہیں تو میں نے بھی یہ فیصلہ کیا کہ میں بھی کچھ دیر سو جاؤں اس لئے غار کے سامنے ہی لیٹ گیا۔

لیکن یہ نیند، عام لوگوں کی نیندوں کی طرح نہیں تھی، کیونکہ ہم لوگ بہت سالوں تک سو رہے۔ ہماری نیند اتنی طویل ہو گئی کہ بادشاہ اور وہاں کے لوگ سالوں سال زندگی گزارنے کے بعد مر گئے۔

یہاں تک کہ انکی اولاد پوتے پوتیاں یا یوں کہا جائے کہ کئی نسلیں اور پشتیں گزر گئیں۔ اور ہم لوگ اسی طرح گہری نیند میں سو رہے۔ لیکن اللہ کی مرضی کی وجہ سے ہمارا جسم پوری طرح سے صحیح و سالم تھا اور ہمیں کوئی نقصان نہیں پہنچا تھا۔

اسی طرح تین سو نو سال گزر گئے اور ہم سو رہے۔ پھر اچانک میری آنکھ کھل گئی۔ میرے بدن پر بہت دھول مٹی جم گئی تھی اس لئے میں نے انگوٹھی لی اور خود کو ہلایا ڈالا یا تاکہ مٹی و دھول چھٹ جائے۔ پھر میں غار کے اندر چلا گیا تاکہ دیکھ سکوں کہ میرے ساتھیوں کا کیا حال ہے۔ میں نے دیکھا کہ میکسی ملین اور انکے



ساتھی مجھ سے پہلے نیند سے جاگ چکے ہیں۔ وہ سبھی لوگ بھوک و پیاس کی وجہ سے کمزوری محسوس کر رہے تھے۔

ان میں سے کوئی بھی یہ نہیں جانتا تھا کہ وہ لوگ کتنا سوئے ہیں۔ اس لئے وہ سوچ رہے تھے کہ ایک، آدھا دن سے زیادہ نہیں سوئے ہیں۔ چونکہ سبھی لوگ بھوکے تھے اس لئے ان میں سے ایک آدمی کچھ پیسے لیکر شہر کی طرف چلا گیا تاکہ کچھ کھانے پینے کا سامان لاسکے۔ وہ سب لوگ اپنے ساتھی کی سلامتی کے لئے دعا کر رہے تھے کہ بادشاہ کے فوجی کہیں اس کو پکڑ کر گرفتار نہ کر لیں۔

ادھر جو ہمارا ساتھی کھانے وغیرہ کا سامان لینے شہر گیا تھا، وہ بھی شہر اور وہاں کے لوگوں کو دیکھ کر تعجب میں پڑ گیا تھا کیونکہ وہاں تو سب کھ بدل چکا

تھا، لوگوں کا لباس، مکان، دکانیں سب نئی طرح کے بنے ہوئے تھے۔ کچھ بھی پہلے جیسا نہیں تھا۔ اور وہاں کے لوگ بھی اللہ پر ایمان لا چکے تھے، وہ صرف اللہ کی عبادت کرتے تھے۔ یہ سب دیکھ کر ہمارا ساتھی کافی پریشان ہو گیا اس کے کچھ سمجھ میں نہیں آ رہا تھا کہ وہ کیا کرے۔ وہ روٹی کی دکان ڈھونڈنے لگا تاکہ وہاں سے روٹیاں لیکر جلد سے جلد اپنے ساتھیوں تک پہنچ سکے اور انکو بتا سکے کہ شہر میں کیا ہوا ہے۔

وہ روٹی کی ایک دوکان پر پہنچا، دکاندار نے جب یہ دیکھا ایک آدمی پرانے زمانے کے کپڑے پہنے ہوئے اور پرانے سٹے لئے ہوئے ہے۔ جو سٹے اب چلتے بھی نہیں ہیں۔ تو وہ شک میں پڑ گیا اور اس نے سوچا کہ لگتا ہے اس آدمی کو کوئی خزانہ ملا ہے۔ اس نے ہمارے ساتھی کو پکڑ لیا اور بادشاہ کے پاس لے گیا۔

ہمارے ساتھی نے ساری بات بادشاہ کو بتادی۔ بادشاہ جو کہ مومن تھا اس نے اور اس کے ساتھیوں نے جب ہمارے ساتھی کی باتیں سنیں تو تعجب میں پڑ گئے اور انکا ایمان اللہ تعالیٰ پر اور زیاہ قوی ہو گیا۔

جب ہمارا ساتھی غار کی طرف پلٹنے لگا تو بہت سے لوگ اس کے ساتھ ہو لئے اور اس کے پیچھے پیچھے غار کی طرف چل دئے تاکہ وہ لوگ بھی ہمیں دیکھ سکیں۔ جب وہ لوگ غار کے پاس پہنچے تو ہمارے ساتھی نے ان لوگوں سے کہا کہ وہ لوگ باہر کہیں میں پہلے اندر جا کر اپنے ساتھیوں کو اطلاع دیتا ہوں کیونکہ وہ لوگ بہت پریشان ہو گئے۔

جب وہ غار میں داخل ہوا، اور تمام واقعات جو اس پر گزر رہے تھے اس کی اطلاع ہم لوگوں کو دی تو ہمارا، ایمان اور بھروسہ اللہ تعالیٰ پر اور بھی بڑھ گیا۔ پھر ہم سب نے اللہ کی بارگاہ میں دعا کی کہ خدا یا ہمیں پھر سے سلا دے تاکہ ہم دوسروں کے لئے عبرت کا سبب بن سکیں۔ ہماری دعا قبول ہوئی اور ہم پھر سے وہیں سو گئے۔



لٹی فے

استاد نے بچوں سے کہا:

جو بچہ جانتا جانا چاہتا ہے، وہ ہاتھ اٹھ کر اٹھائے۔
سب بچوں نے ہاتھ اٹھا دیے مگر نادیہ نے ہاتھ اٹھ کر نہ اٹھائے۔

استاد : (نادیہ سے) کیا تو جانتا نہیں جانا چاہتے ؟

نادیہ : نہیں ماسٹر جی۔ استاد : کیوں ؟

نادیہ: کیونکہ میری ماں نے کہاں تھا کہ سکول سے سیٹھ کے گھر آنا، ورنہ ہاتھ پیر توڑ دوں گی۔

ایک پہلوان بچہ نے ایک کمزور بچہ کو ہتھکڑیاں مارا۔
کمزور بچہ نے پوچھا : تو نے ہتھکڑیاں گھسے سے مارا ہے یا مچاک سے؟
پہلوان بچہ نے کہا : گھسے سے۔

کمزور بچہ بولا:
فیر ٹیک ہے، کیونکہ مچاک سے مچکے بیلکول پسند نہیں ہے۔

خوٹا بچہ اپنا ریلوے لیکر آیا اور
اپنے باپ سے بولا: آپ کھانا کھاتے ہیں؟
باپ : کیسے بھائی؟
بچہ: کیونکہ میں کھانا کھا رہا ہوں۔
آپ کو میرے لیے کھانا کھانا پڑے گی۔

باپ نے بچے سے کہا:
جب میں تمہاری عمر کا تھا تو کبھی سو نہیں بولتا تھا۔
بچہ : پتلی بتاؤ کہ جب آپ نے سو بولنا شروع کیا، تب آپ کی عمر کیا تھی؟

استاد نے بچوں سے کہا : معلوم ہوتا ہے کہ سوال نے توہیں پریشان کر رکھا ہے۔
ایک شاگرد نے جواب دیا : جی نہیں، سوال تو سادہ ہے
اسلیت میں پریشان تو ہمیں اس کے جواب نے کر رکھا ہے۔

سلیم : اگر پرنسپل نے اپنے اٹلکھانے واپس نہ لیے تو میں سکول چھوڑ دوں گا۔
نسیم : کیا کہا تھا پرنسپل نے؟
سلیم : کہا تھا، سکول چھوڑ دو۔



بہترین درس

تین بھائی، ایک آدمی کو امیر المؤمنین حضرت علی علیہ السلام کے پاس لے کر آئے اور کہنے لگے کہ اس نے ہمارے باپ کا قتل کیا ہے۔
حضرت امام علی علیہ السلام نے اس آدمی سے پوچھا: تو نے ایسا کیوں کیا ہے؟

وہ آدمی کہنے لگا: حضور میں ایک چرواہا ہوں، بھیڑ بکری اور اونٹ چراتا ہوں۔ میرے ایک اونٹ نے ان لوگوں کے والد کے باغ میں پیڑ کے پتے کھانا شروع کر دیے تو ان کا والد اٹھا اور میرے اونٹ کو ایک پتھر دے مارا، پتھر اتنا زور سے مارا تھا کہ اونٹ وہیں پر مر گیا۔ جب میں نے یہ حالت دیکھی تو مجھے بہت غصہ آیا جس کی وجہ سے میں نے وہی پتھر اس آدمی کے سر پر دے مارا اور بد قسمتی سے وہ آدمی بھی وہیں پر ہی مر گیا۔
حضرت امام علی علیہ السلام نے فرمایا: تم نے ایک آدمی کا قتل کیا ہے اس لئے مجھے تجھ پر حد جاری کرنی ہوگی یعنی تم کو سزا دینا ہوگی۔ وہ آدمی کہنے لگا: مولا مجھے تین دن کی مہلت دے دیں۔

میرا باپ مر چکا ہے اور وراثت میں میرے اور میرے چھوٹے بھائی کے لئے خزانہ چھوڑ گیا ہے۔ اگر میں مار دیا جاتا ہوں تو وہ خزانہ بھی برباد ہو جائے گا اور میرا بھائی بھی۔

امیر المؤمنین حضرت علی علیہ السلام فرماتے: ٹھیک ہے لیکن تیری ضمانت کون لے گا؟ اس آدمی نے لوگوں کی طرف نظر دوڑائی تو اس کی نظر ابوذرؓ پر پڑی۔ کہنے لگا یہ آدمی میرا ضمانت بنے گا!۔
امیر المؤمنین حضرت علی علیہ السلام نے فرمایا: اے ابوذر کیا تم اس شخص کی ضمانت قبول کرتے ہو؟ ابوذرؓ نے عرض کیا: جی ہاں میں اس



کیا خدا ہماری نماز کا محتاج ہے جو ہم ہر روز نماز پڑھیں؟

خون کی کمی کی شکایت دور ہوتی ہے۔ اس سے جسم کی افزائش معمول کے مطابق ہوتی ہے۔ یہ مدافعتی نظام کو بہتر بناتا ہے۔ ہائی بی پی کے مریضوں کو نمکین کاجو کے استعمال کرنے سے گریز کرنا چاہئے۔ کاجو میں تانبہ اور میگنیشیم بھی بہت مقدار میں پایا جاتا ہے۔ یہ عضلات کو طاقتور اور صحت مند بنانے میں مدد دیتا ہے۔ یہ جسم کی تھکان کو دور کرتا ہے۔ یہ وزن بھی کم کرتا ہے، شوگر کے مریضوں کیلئے کاجو کا استعمال بہت ہی مفید مانا گیا ہے۔ ان میں ایسے مادے ہوتے ہیں جو خون میں موجود انسولین کو عضلات کے خلیوں میں جذب کرنے کی صلاحیت رکھتے ہیں۔

کاجو میں ایکٹیوکمپاؤنڈز زیادہ پایا جاتا ہے جو خون میں شوگر کی سطح کو بڑھنے سے روکتا ہے۔ کاجو سے ہڈیاں مضبوط ہوتی ہیں، دل صحت مندر ہوتا ہے، جلد بہتر رہتی ہے۔ کینسر کے امکانات کم سے کم ہوتے ہیں، دماغ کی صحت کیلئے کاجو اہمیت کا حامل ہے۔ اس کے استعمال سے بال اور مسوڑھے صحت مندر رہتے ہیں۔ اس سے کولیسٹرال کی مقدار کم ہوتی ہے۔

سردی کا موسم آچکا ہے۔ راتوں میں سردی بہت بڑھ جاتی ہے اور دن میں بھی کسی قدر سردی محسوس ہو رہی ہے۔ یہ اللہ تعالیٰ کا لاکھ احسان ہے کہ اس نے اپنے بندوں کی خاطر اس موسم میں بھی صحت مندر رہنے کیلئے بے شمار پھل اور سبزیاں پیدا کی ہیں۔ ان پھلوں اور سبزیوں کے ذائقہ سے نہ صرف ہم لطف اندوز ہوتے ہیں بلکہ ان کے فوائد سے استفادہ کرتے ہیں۔ ان پھلوں میں خشک میوے (dry fruits) بھی شامل ہیں جن میں صحت کاراز چھپا ہے۔ کاجو بھی خشک میوہ میں شامل ہے۔

اسے انگریزی میں Cashew کہتے ہیں۔ کاجو جنوبی ہندوستان (south india) میں بہت زیادہ پیدا ہوتا ہے۔ کاجو بے شمار فوائد والا خشک میوہ ہے۔ اسے سردیوں میں باقاعدگی کے ساتھ کھانا چاہئے جس سے اس موسم میں معدنیات، وٹامنس اور دیگر غذائی ضروریات کی تکمیل ہوتی ہے۔ کاجو کے بہت فائدہ ہیں۔ اسے کھانے سے جسم میں



صحت کا پھل: کاجو

خون کی کمی کی شکایت دور ہوتی ہے۔ اس سے جسم کی افزائش معمول کے مطابق ہوتی ہے۔ یہ مدافعتی نظام کو بہتر بناتا ہے۔ ہائی بی پی کے مریضوں کو نمکین کاجو کے استعمال کرنے سے گریز کرنا چاہئے۔ کاجو میں تانبہ اور میگنیشیم بھی بہت مقدار میں پایا جاتا ہے۔ یہ عضلات کو طاقتور اور صحت مند بنانے میں مدد دیتا ہے۔ یہ جسم کی تھکان کو دور کرتا ہے۔ یہ وزن بھی کم کرتا ہے، شوگر کے مریضوں کیلئے کاجو کا استعمال بہت ہی مفید مانا گیا ہے۔ ان میں ایسے مادے ہوتے ہیں جو خون میں موجود انسولین کو عضلات کے خلیوں میں جذب کرنے کی صلاحیت رکھتے ہیں۔

کاجو میں ایکٹیوکمپاؤنڈز زیادہ پایا جاتا ہے جو خون میں شوگر کی سطح کو بڑھنے سے روکتا ہے۔ کاجو سے ہڈیاں مضبوط ہوتی ہیں، دل صحت مندر ہوتا ہے، جلد بہتر رہتی ہے۔ کینسر کے امکانات کم سے کم ہوتے ہیں، دماغ کی صحت کیلئے کاجو اہمیت کا حامل ہے۔ اس کے استعمال سے بال اور مسوڑھے صحت مندر رہتے ہیں۔ اس سے کولیسٹرال کی مقدار کم ہوتی ہے۔

سردی کا موسم آچکا ہے۔ راتوں میں سردی بہت بڑھ جاتی ہے اور دن میں بھی کسی قدر سردی محسوس ہو رہی ہے۔ یہ اللہ تعالیٰ کا لاکھ احسان ہے کہ اس نے اپنے بندوں کی خاطر اس موسم میں بھی صحت مندر رہنے کیلئے بے شمار پھل اور سبزیاں پیدا کی ہیں۔ ان پھلوں اور سبزیوں کے ذائقہ سے نہ صرف ہم لطف اندوز ہوتے ہیں بلکہ ان کے فوائد سے استفادہ کرتے ہیں۔ ان پھلوں میں خشک میوے (dry fruits) بھی شامل ہیں جن میں صحت کاراز چھپا ہے۔ کاجو بھی خشک میوہ میں شامل ہے۔

اسے انگریزی میں Cashew کہتے ہیں۔ کاجو جنوبی ہندوستان (south india) میں بہت زیادہ پیدا ہوتا ہے۔ کاجو بے شمار فوائد والا خشک میوہ ہے۔ اسے سردیوں میں باقاعدگی کے ساتھ کھانا چاہئے جس سے اس موسم میں معدنیات، وٹامنس اور دیگر غذائی ضروریات کی تکمیل ہوتی ہے۔ کاجو کے بہت فائدہ ہیں۔ اسے کھانے سے جسم میں



شرفو کی کہانی (۲)

پیر نہ کاٹنے کی وجہ بتادی۔ بیٹے کی بات سنتے ہی لکڑہارے کے تن بدن میں آگ لگ گئی۔ وہ کہنے لگا: تو کچھ نہیں کر سکے گا۔ تجھے لکڑیاں کاٹ کر بیچنے کے لیے بھیجا تھا، بیڑ کا پھل دیکھنے کے لیے نہیں۔

میں کیا کرتا ابا جان! آپ جانتے نہیں، لوگ اس پھل کو پکا کر کھاتے ہیں۔

باپ گرجا: تو تمہیں کیا؟ لوگ پھل پکا کر کھاتے ہیں تم تو نہیں۔ ابا جی! وہ لوگ بھی تو ہمارے جیسے ہی ہیں نا۔

لکڑہارے کا غصہ بڑھتا جا رہا تھا کہ اس کی بیوی نے پھر اسے سمجھایا: "بس اب اور کچھ نہ کہو۔ مجھے امید ہے، شرفو سیدھے راستے پر آجائے گا۔"

لکڑہارا بولا: "اس مرتبہ میں برداشت کر لیتا ہوں۔ آئندہ اس نے ایسی بیہودہ حرکت کی تو میں اسے گھر سے نکال دوں گا۔"

کچھ دن گزر گئے۔ لکڑہارے نے اس مرتبہ پرانے درختوں کا پتا بنا کر کہا: "خبردار! اب کوئی بہانہ نہ بنانا، پیسے لے کر گھر آنا۔" شرفو جنگل میں گیا۔ اس نے پرانے پیڑ دیکھے۔ بہت بوڑھے ہو چکے تھے۔ انہیں دیکھ کر وہ سوچنے لگا: انھوں نے برسوں تک مسافروں کے لیے ٹھنڈے سائے مہیا کیے ہیں۔ تھکے ہوئے لوگ ان کے نیچے بیٹھ کر سکون حاصل کرتے رہے ہیں۔ اس لئے

دودن بیت گئے تو پھر باپ نے بیٹے کو ایک اور جگہ کا پتا بتایا اور تاکید کی خبردار! پیڑ پروار کرنے سے پہلے اوپر نہ دیکھنا۔" شرفو نے عہد کر لیا کہ وہ پہلے کی طرح اوپر نہیں دیکھے گا اور باپ کے بتائی ہوئی جگہ پر چلا گیا۔ اسے اپنا وعدہ یاد تھا۔ اس لئے پہلے پیڑ کے پاس پہنچ کر اس نے اوپر نہیں دیکھا۔ وہ نیچے دیکھتے ہوئے کلبھاڑی مارنے ہی والا تھا کہ اس کی نظر پیڑ کے نیچے اس جنگلی پھل پر پڑی، جسے بعض لوگ پکا کر کھاتے ہیں۔

ایک سوال اس کے ذہن میں ابھر آیا: اس پیڑ پر یہ پھل لگتا ہے۔ میں اسے کیوں نقصان پہنچاؤں کیا اس کی شاخیں کاٹنے سے اس پھل کا کچھ حصہ برباد نہیں ہو جائے گا؟ کیا یہ ان لوگوں کے ساتھ زیادتی نہیں ہوگی جو اسے پکا کر کھاتے ہیں؟

وہ دیر تک اس پیڑ کے نیچے بیٹھا رہا اور سوچتا رہا۔ پھر گھر کی طرف واپس چل دیا۔

اس روز جب لکڑہارے نے اپنے بیٹے کو دیر سے آتے دیکھا تو اسے یقین ہو گیا کہ اب یہ ضرور لکڑیاں بیچ کر پیسے لایا ہوگا۔ وہ خوش ہو کر بولا: "آج میرا بیٹا کافی پیسے لے کر آیا ہے۔ ہے نا، کیوں شرفو؟" نہیں ابا جان! میں کوئی پیسہ نہیں لایا۔" پھر اس نے باپ کو



ان کو کاٹنا صحیح نہیں ہوگا۔

یہ سوچ کر وہ واپس آنے لگا۔ راستے میں ایک نہر پڑتی تھی۔ اس کے پل پر سے گزرتے ہوئے اس نے کلبھاڑا نیچے پانی میں پھینک دیا کہ نہ یہ ہوگا اور نہ مجھے لکڑیاں کاٹنے کے لیے کہا جائے گا۔ شہر میں ایک بازار سے گزرتے ہوئے اس نے کئی دکانوں کو دیکھ کر سوچا: یہ اچھا کام ہے۔ میں بھی ابا جان سے کہہ کر بازار میں ایک دکان کھول لوں گا۔

اس روز وہ شام کے قریب اپنے گھر پہنچا۔ لکڑہارے کو پورا یقین تھا کہ اس کا بیٹا ضرور لکڑیاں بیچ کر آیا ہے۔

تو آج تم نے کیا کام کیا ہے؟

باپ کا یہ سوال سن کر شرفو بولا: ابا جان! پیڑ تو میں نہیں کاٹ سکا۔ وہ ساری عمر مسافروں کو ٹھنڈے سائے دیتے رہے ہیں۔ میں نے سوچ لیا ہے کہ بازار میں دکان پر بیٹھا کروں گا۔

بیٹے کے منہ سے جیسے ہی یہ لفظ نکلے لکڑہارا اپنے غصے پر قابو نہ رکھ سکا اور اسے اسی وقت گھر سے نکال دیا۔ ماں نے دخل دینا چاہا تو لکڑہارے نے اسے بھی جھڑک دیا: "بس، بس اب تم ایک لفظ نہیں ہوگی۔"

شرفو گھر سے نکل کر چلنے لگا۔ اس کا کوئی ٹھکانا تو تھا نہیں۔

کہاں جا سکتا تھا؟ چلتا گیا، چلتا گیا، یہاں تک کہ اس قدر تھک گیا کہ اس کے لیے ایک قدم اٹھانا بھی دوہر ہو گیا تھا۔ قریب ہی ایک بڑی شان دار حویلی تھی۔ وہ اس کے دروازے پر گر پڑا اور بیہوش ہو گیا۔

ادھر لکڑہارا اور اس کی بیوی اپنے بیٹے کی جدائی میں تڑپ رہے تھے۔ لکڑہارا بری طرح پچھتا رہا تھا کہ اس نے بیٹے کو گھر سے کیوں نکال دیا تھا۔ ایک دن دونوں بیٹے کی باتیں یاد کر کے رو رہے تھے کہ ان کے مکان کے آگے ایک گھسی رکی۔ اس میں سے ایک شخص اتر اور لکڑہارے کے دروازے پر دستک دینے لگا۔

"کیوں جناب! کیا بات ہے؟" لکڑہارے نے دروازہ

کھول کر اس آدمی سے پوچھا۔

"آپ کو، آپ کی بیوی کو نادر خاں نے بلایا ہے۔"

"نادر خاں کون؟" لکڑہارے نے یہ نام پہلی بار سنا تھا۔

"آپ نے نادر خاں کا نام نہیں سنا؟"

"جی نہیں۔"

"وہ بڑے آدمی ہیں، سب ان کی عزت کرتے ہیں۔"

مہربانی کر کے گھسی میں بیٹھ جائیں۔"

لکڑہارا اور اس کی بیوی گھسی میں بیٹھ گئے۔ گھسی انہیں ایک

بڑے خوب صورت اور شاندار باغ میں لے آئی۔

وہ باغ کو دیکھ دیکھ کر حیران ہو رہے تھے کہ ایک طرف سے

آواز آئی: "ابا جان! اماں!"

"ارے شرفو! لکڑہارا اور اس کی بیوی اپنے بیٹے کو دیکھ کر حیران

ہو گئے۔ شرفو نے اعلیٰ قسم کا لباس پہن رکھا تھا اور بہت خوش لگتا تھا۔

"تم یہاں کہاں؟" شرفو کی ماں نے پوچھا۔

شرفو کہنے لگا: "اماں! اس شام جب ابا جان نے مجھے گھر سے نکالا تھا تو میں تھک کر ایک حویلی کے دروازے پر گر پڑا۔ اس حویلی کے مالک نادر خاں ہیں، جنھوں نے یہ دیکھ کر کہ مجھے پیڑوں اور پرندوں سے بڑی محبت ہے، اپنے اس باغ کا مالی بنا دیا ہے۔ وہ ہیں میرے محسن۔"

نادر خاں قریب آگئے اور کہنے لگے: "واقعی شرفو کی اس بات نے مجھے بہت متاثر کیا تھا کہ اسے پیڑوں کا بڑا خیال ہے۔ پیڑوں سے محبت کرتا ہے۔ میں نے اسے اپنے باغ کے پیڑوں کی رکھوالی کا کام سپرد کر دیا ہے۔ وہ یہاں نئے نئے پیڑ لگائے گا اور ان کی حفاظت کرے گا، اس نے پیڑوں سے محبت کی ہے اور پیڑوں نے اس محبت کا یہ بدلہ دیا ہے۔"

شرفو کے اصرار پر اس کے ماں باپ بھی وہیں رہنے لگے اور خوشی خوشی زندگی بسر کرنے لگے۔



پیارے نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم

دادی جان، ہمیں پیارے نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے بارے میں کچھ باتیں بتائیں۔

ندیم، عمیر اور زبیر نے ایک زبان ہو کر کہا۔

بچو، بتاتی ہوں، لیکن کل باتیں میں نے پیارے نبی حضرت محمد صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے بارے میں آپ کو بتائی تھیں، کیا وہ آپ تینوں کو یاد ہیں۔ جی دادی جان، یاد ہیں۔ سب نے ایک ساتھ کہا۔ ندیم، آپ بتاؤ کہ ظہور اسلام سے پہلے عربوں کی کیا حالت تھی۔ دادی جان نے سوال کیا۔

ندیم نے جواب دیا: ظہور اسلام سے پہلے عرب میں لوگ بہت سی برائیوں میں مبتلا تھے، بیٹیوں کو پیدا ہوتے ہی زندہ دفن کر دیتے تھے، ان میں تھوڑی تھوڑی باتوں پر جھگڑا ہو جاتا جو بڑھتے بڑھتے قبائلی دشمنی کی صورت اختیار کر لیتا تھا جو کہ بہت دنوں تک جاری رہتا، شراب پینا، جو کھیلنا اور ناچنا گانا ان میں عام تھا، اللہ تعالیٰ نے حضرت محمد صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کو دنیا میں آخری نبی بنا کر بھیجا اور آپ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم پر اپنی آخری کتاب قرآن مجید کو نازل کیا، آپ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے عرب کے لوگوں کو جہالت کے اندھیروں سے نکالنے کے لیے، ایک اللہ کی عبادت کرنے کو کہا اور دین اسلام کی دعوت دی۔

زبیر نے سوال کیا: ہمارے پیارے نبی حضرت محمد صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کب اور کہاں پیدا ہوئے اور آپ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے والدین کا کیا نام تھا؟

دادی جان نے جواب دیا: ہمارے پیارے نبی حضرت محمد صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم سترہ ربیع الاول کو عرب کے شہر مکہ میں پیدا ہوئے، آپ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے والد کا نام جناب عبداللہ اور والدہ کا نام حضرت بی بی آمنہ تھا۔ عمیر نے پوچھا: ہمارے پیارے نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم بچوں کے ساتھ کس طرح پیش آتے تھے۔

دادی جان نے جواب دیا: بچوں کے ساتھ آپ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم بہت محبت کرتے تھے، آپ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم بچوں کے قریب سے گزرتے تو پیار سے ان کو سلام کرنے میں پہل کرتے تھے، آپ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے بچوں کی اہمیت کو واضح کرتے ہوئے فرمایا کہ، وہ

شخص ہم میں سے نہیں جو بچوں پر رحم نہ کرے۔ ماشاء اللہ، آپ تینوں کو کل والی ساری باتیں یاد ہیں، اب میں آپ کو نبی کریم صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے بارے میں اور بھی باتیں بتاتی ہوں، غور سے سنو گے اور اس پر عمل بھی کرو گے، وعدہ کرو۔ دادی جان نے کہا۔

جی دادی جان، وعدہ! تمام بچوں نے مل کر کہا۔ تو سنو۔

کفار مکہ اگرچہ نبی کریم صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے بدترین دشمن تھے، پھر بھی وہ آپ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کو صادق اور امین کے لقب سے پکارتے تھے، آپ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے کبھی جھوٹ نہ بولا اور سچ بولنے کی تاکید فرمائی، آپ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے ارشاد فرمایا کہ سچائی نجات دلائی ہے اور جھوٹ ہلاکت میں ڈالتا ہے۔ آپ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کو جھوٹ سے سخت نفرت تھی۔ آپ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم بچپن سے ہی جھوٹ بولنے والوں سے ماننا جلنا پسند نہیں فرماتے تھے۔

پیارے بچو، گالی دینا بھی بہت بری عادت ہے، اللہ اور اس کے نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا۔ مسلمان وہ ہے جس کے ہاتھ اور زبان سے دوسرے مسلمان محفوظ رہیں۔

نبی کریم صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم بہت خوش اخلاق تھے، آپ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی خوش مزاجی کے بھی بہت سے واقعات ہیں۔

اللہ تعالیٰ نے وہ تمام خوبیاں اور اچھائیاں جو پہلے انبیاء علیہم السلام میں تھیں وہ خوبیاں اور اچھائیاں آپ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم میں جمع کر دی تھیں۔

پیارے بچو، ہمیں چاہیے کہ ہم بھی آپ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے بتائے ہوئے طریقے پر چلیں، جس کام کو کرنے سے آپ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے منع فرمایا ہے خود بھی اس کام سے بچیں اور دوسروں کو بھی اس کام سے بچنے کو کہیں، اسی میں ہماری دنیا و آخرت کی کامیابی ہے، اللہ تعالیٰ ہمیں نیک عمل کی توفیق عطا فرمائے۔ آمین



صادق آل محمد

ربیع الاول کی ۱۷ تاریخ تھی مدینہ کے رہنے والے جوش و خروش سے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی ولادت باسعادت کی خوشیاں منا رہے تھے۔ لیکن اہلبیت رسول یعنی امام زین العابدینؑ اور امام باقرؑ کے گھر اس خوشی کا رنگ ہی کچھ اور تھا۔

کیونکہ اس دن خداوند نے اس گھرانے کی خوشیوں کو دوبالا کر دیا تھا۔ وہ ایک طرف تو رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی روز ولادت کی خوشی منا رہے تھے تو دوسری طرف حضرت امام محمد باقرؑ کے گھر میں رسول اللہؐ کے چھٹے جانشین کی ولادت کے منتظر تھے۔

امام سجادؑ اور انکے بیٹے امام محمد باقرؑ ایک کمرے میں تشریف فرما تھے کہ اندر سے ایک عورت دوڑتی ہوئی آئیں اور بچے کی ولادت کی خبر سنائی۔ کچھ ہی دیر گزری تھی کہ سفید کپڑے میں لپیٹ کر ایک نومولود ننھے سے بچے کو امام سجادؑ کی خدمت میں لایا گیا۔

امام سجادؑ نے بچے کے چہرے سے کپڑا ہٹایا۔ بچے کا چہرہ دیکھ کر آپ کے چہرے مبارک پر مسکراہٹ دوڑ گئی۔ ننھا سا بچہ ایک خوبصورت پھول کی طرح آرام سے سو رہا تھا۔

امام سجادؑ نے اپنے پوتے کو گود میں لیا اور اس کو پیار کیا پھر اس کے کانوں میں اذان و اقامت کہی اور پھر بچے کو آسمان کی طرف بلند کر کے دعا کی۔

اب بچے کا نام رکھنے کی باری تھی۔ امام محمد باقرؑ اپنے والد کے احترام میں خاموش تھے۔ امام زین العابدینؑ نے فرمایا:

”میرے جد، رسول اللہؐ نے فرمایا تھا کہ جب میرا بیٹا جعفر بن محمد بن علی بن حسینؑ پیدا ہو تو اس کو صادق کے نام سے پکارنا اور جان لو کہ جو اس کی پیروی کرے گا وہ دنیا اور آخرت میں سعادت و خوش بختی سے ہمکنار ہوگا۔“

چونکہ حضور صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے آپ کو صادق کا لقب دیا ہے۔ اسی لئے آپ کو ”صادق آل محمد“ بھی کہتے ہیں۔



بہت یاد آرہے تھے لیکن وہ اپنے بچے کو دیکھ کر مطمئن تھیں اور اس سے باتیں کر رہی تھیں۔

جب جناب عبدالمطلب کو پوتے کی ولادت کی خبر ملی تو ان کی آنکھوں میں خوشی کے آنسو آگئے وہ فوراً اپنے پوتے کو دیکھنے کے لئے بی بی آمنہ کے کمرے کے اندر داخل ہوئے اور انہوں نے بچے کو گود میں اٹھالیا پھر اس سے پیار کر کے کہنے لگے یہ تو اپنے باپ عبد اللہ سے زیادہ خوبصورت ہے۔

مکہ کے لوگوں کو جب جناب عبد اللہ کے بیٹے کی ولادت کے بارے میں معلوم ہوا تو وہ اسے دیکھنے کے لئے آنے لگے جو بھی اس بچے کو دیکھتا وہ کہتا: اس بچے کے چہرے پر کتنا نور ہے، اس کے بدن سے کتنی اچھی خوشبو آتی ہے، جناب عبدالمطلب کو تو ایسے پوتے پر فخر ہونا چاہیے۔

جناب عبدالمطلب نے اپنے پوتے کی ولادت پر بہت خوشیاں منائیں اور غریبوں کو کھانا کھلایا بہت دنوں تک غریب لوگ ان کے دسترخوان پر کھانا کھاتے رہے ساتویں دن مولود بچے کا نام رکھنے کے لئے سب لوگ جناب عبدالمطلب کے پاس جمع ہو گئے وہ دیکھنا چاہتے تھے کہ جناب عبدالمطلب اپنے پوتے کا کیا نام رکھتے ہیں۔

جناب عبدالمطلب نے مسکرا کر کہا میں اسے محمد (قابل تعریف) کہہ کر پکاروں گا۔ یہ سن کر ایک شخص بولا: محمد! ایسا نام تو آج تک کسی عرب نے نہیں رکھا ہے۔ جناب عبدالمطلب نے جواب دیا اس لئے کہ میرے پوتے جیسا قابل تعریف بچہ آج تک پیدا ہی نہیں ہوا ہے۔

آگیا جب لوگوں کو قافلہ کے آنے کی خبر ملی تو سب لوگ اس کے استقبال کے لئے پہنچ گئے بی بی آمنہ بھی اپنے شوہر جناب عبد اللہ کے استقبال کے لیے آئی تھیں لیکن انہیں وہ کہیں نظر نہیں آئے جب انہوں نے قافلہ والوں سے عبد اللہ کے بارے میں پوچھا تو انہوں نے بتایا کہ جناب عبد اللہ، واپس آتے ہوئے راستہ میں بیمار ہو گئے تھے اور اس دنیا سے رخصت ہو گئے ہیں۔

بی بی آمنہ کو اپنے شوہر کی موت کا بہت دکھ ہوا اور آپ بہت دنوں تک روتی رہیں وہ بہت غمگین رہتی تھیں لیکن اب وہ اپنے بچے کی ولادت کا انتظار کر رہی تھیں جب بچے کی ولادت کا وقت قریب آیا تو بی بی آمنہ بڑی پریشان ہوئیں کیونکہ ان کی مدد کرنے والا کوئی نہیں تھا انہوں نے تھوڑی دیر کے لئے آنکھیں بند کر لیں جب آنکھیں کھولیں تو یہ دیکھ کر حیران رہ گئیں کہ ان کے کمرے میں ہر طرف نور ہی نور پھیلا ہوا ہے بہت سے فرشتے اور حواریں آسمان سے زمین پر آئی ہوئی تھیں بی بی آمنہ ان کو دیکھ کر بہت خوش ہوئیں اور انہیں بہت سکون ملا، اسی دوران بی بی آمنہ کا پھول جیسا فرزند دنیا میں آگیا۔

فرشتوں نے اس بچے کو جنت کے طشت (برتن) میں گلاب سے غسل دیا اور ایک صاف کپڑے میں لپیٹ کر بی بی آمنہ کے پاس لٹا دیا بی بی آمنہ نے اپنے بیٹے کی طرف محبت بھری نگاہوں سے دیکھا اور پیار سے اس کے گالوں پر ہاتھ پھیرا اور رخساروں پر پیار کیا۔

بچے کا بدن خوشبو میں بسا ہوا تھا بی بی آمنہ کو آج عبد اللہ



خوبصورت ترین پھول

پرانے زمانے کی بات ہے حجاز کی سرزمین پر (جسے آج کل سعودی عرب کہتے ہیں) ایک شہر ہے جس کا نام مکہ ہے۔ وہاں کے رہنے والے لوگ قریش قبیلہ کے نام سے مشہور تھے عربوں کے سب قبیلے، قریش قبیلہ کی بہت عزت کیا کرتے تھے اس قبیلہ کے سردار کا نام عبدالمطلب تھا۔

جناب عبدالمطلب کے دس بیٹے تھے ان میں سے ایک کا نام عبد اللہ تھا وہ سب سے زیادہ خوبصورت، رحم دل اور بہادر تھے وہاں کے سارے لوگ ان کی نیکیوں اور اچھی عادتوں کی وجہ سے ان سے بہت محبت کیا کرتے تھے عبد المطلب بھی اپنے اس بیٹے کو دوسروں کے مقابلے میں زیادہ

چاہتے تھے جب جناب عبد اللہ جوان ہوئے تو جناب عبد المطلب نے اس زمانے کی بہترین لڑکی کے ساتھ ان شادی کر دی جن کا نام بی بی آمنہ تھا۔

اس دور میں لوگ قافلوں کی صورت میں سفر کیا کرتے تھے۔ ایک دن جناب عبد اللہ نے بی بی آمنہ کو بتایا کہ وہ تجارت کے لئے ایک قافلہ کے ساتھ شام جا رہے ہیں بی بی آمنہ نے جناب عبد اللہ کا سامان تیار کرنے میں ان کی مدد کی اور پھر جناب عبد اللہ، بی بی آمنہ کو خدا حافظ کہہ کر اپنے اونٹ پر سوار ہو گئے اور شام کی طرف روانہ ہو گئے۔

کچھ مہینوں کے بعد وہ قافلہ شام کا سفر طے کر کے واپس

تفسیر قرآن

سورہ ہرسلات (۱۱)

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

(1) وَالْمُرْسَلَاتِ عُرْفًا (2) فَالْعَاصِفَاتِ عَصْفًا (3) وَالنَّاشِرَاتِ نَشْرًا (4) فَالْفَارِقَاتِ فَرْقًا (5) فَالْمُلْقِيَاتِ ذِكْرًا (6) غُدُرًا أَوْ نَذْرًا (7) إِنَّمَا تُوعَدُونَ لَوَاقِعٍ (8) فَإِذَا النُّجُومُ طُمِسَتْ (9) وَإِذَا السَّمَاءُ فُرِجَتْ (10) وَإِذَا الْجِبَالُ نُسِفَتْ (11) وَإِذَا الرُّسُلُ أَقْبَتْ (12) لِأَيِّ يَوْمٍ أُجِّلَ (13) لِيَوْمِ الْفُصْلِ (14) وَمَا أَدْرَاكَ مَا يَوْمِ الْفُصْلِ (15) وَيَلْ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ

ترجمہ:

(1) ان کی قسم جنہیں تسلسل کے ساتھ بھیجا گیا ہے (2) پھر تیز رفتاری سے چلنے والی ہیں (3) اور قسم ہے ان کی جو اشیاء کو منتشر کرنے والی ہیں (4) پھر انہیں آپس میں جدا کرنے والی ہیں (5) پھر ذکر کو نازل کرنے والی ہیں (6) تاکہ عذر تمام ہو یا خوف پیدا کرایا جائے (7) جس چیز کا تم سے وعدہ کیا گیا ہے وہ بہر حال واقع ہونے والی ہے (8)

پھر جب ستاروں کی چمک ختم ہو جائے (9) اور آسمانوں میں شگاف پیدا ہو جائے (10) اور جب پہاڑ اڑنے لگیں (11) اور جب سارے پیغمبر علیہ السلام ایک وقت میں جمع کر لئے جائیں (12) بھلا کس دن کے لئے ان باتوں میں تاخیر کی گئی ہے (13) فیصلہ کے دن کے لئے (14) اور آپ کیا جانیں کہ فیصلہ کا دن کیا ہے (15) اس دن جھٹلانے والوں کے لئے جہنم ہے۔

تفسیر:

اس سورہ میں چند خاص باتیں ہیں:

(1) یہ سورہ ان سوروں میں شامل ہے جن کی ابتدائی آیتوں میں قیامت کا تذکرہ کیا گیا ہے۔
جیسے: 1- سورہ انبیاء 2- سورہ قمر 3- سورہ حج 4- سورہ واقعہ 5- سورہ قاحہ 6- سورہ قیامت 7- سورہ نباہ 8- سورہ تکویر 9- سورہ انفطار 10- سورہ انشقاق 11- سورہ غاشیہ 12- سورہ قارعہ 13- سورہ زلزال

(2) یہ سورہ سورہ فاطر، ذاریات اور نازیات کی طرح فرشتوں کے بارے میں قسم سے شروع ہوا ہے۔
جیسے سورہ رحمن میں "فبای الاءار بکما تکذبان" اور سورہ میں "فکیف عذابی و نذر" کی تکرار ہے اسی طرح اس سورہ میں "ویل یومئذ للمکذبین" دس بار دہرایا گیا ہے جو اس بات کی دلیل ہے کہ جھٹلانے والوں کے لئے دس طرح کے عذاب رکھے گئے ہیں۔

ذرا سوچو! جب یہ دنیا بنائی اور سجائی گئی ہے تو ایک دن برباد بھی ضرور ہوگی۔ مگر یہ اتنی بڑی دنیا برباد کیسے ہوگی؟ اس

سورہ میں اس بات کا آسان جواب دیا گیا ہے۔

اس دن ایسے خطرناک طوفان، تیز آندھیاں اور ہوائیں چلیں گی کہ جن سے چھوٹی موٹی چیزیں ہی نہیں بلکہ بڑے بڑے پہاڑ، سورج اور چاند، زمین اور آسمان سب اڑ اڑ کر ایک دوسرے سے ٹکرا رہے ہوں گے اب سوچو اس وقت دنیا کا کیا حال ہوگا؟

آسمان سے بیشمار فرشتے نیچے بھیجے جائیں گے جن کے پروں کی ہوا ان طوفانوں کو اور تباہ کن بنا دے گی سب کچھ تیزی کے ساتھ بکھر کر ہر طرف پھیل جائے گا۔ ستاروں کی چمک ختم ہو جائے گی اور آسمان پھٹ جائے گا اور پہاڑ پتنگوں کی طرح اڑنے لگیں گے۔

یہ وہ خدائی وعدہ ہے جو ضرور پورا ہو کر رہے گا۔

تو پھر ان کے بعد کیا ہوگا؟

دنیا میں جب سب کچھ تتر بتر ہو جائے گا تو سارے

پیغمبر ایک وقت میں (ایک جگہ) جمع ہوں گے انہیں کس لئے جمع کیا جائے گا؟

جی ہاں۔ وہ فیصلہ کا دن ہوگا

جناب آدم سے لیکر پیغمبر اکرم صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم تک سب نبی حق کے فیصلہ کے لئے ایک جگہ ہونگے اور وہ خدا سے کہیں گے کہ اے اللہ ہم نے انہیں تیری طرف بلایا دین حق کی بہت دعوت دی مگر انہوں نے ہماری کوئی بات نہیں سنی۔ تب حق کو جھٹلانے والوں کو جہنم میں ڈال دیا جائے گا۔ اگلے پچھلے۔ حق کو جھٹلانے والے سب لاین سے لگا کر جہنم میں ڈال دئے جائیں گے اور انہیں اس سے کوئی نہیں بچا پائے گا۔

لہذا سمجھا دو یہی ہے جو اپنی زندگی میں حق کا پیغام اچھی طرح سنے اور اس پر عمل کرے اور آخرت کے دن اور عذاب سے ڈرتا رہے۔

الفاظ کے معنی

مرسلات : بھیجی ہوئی (ہوائیں)	عرفاً : مسلسل (معروف)	عصفاً : تیز و تند ہوا
ناشرات : منتشر کرنے والی	فارقات : الگ کرنے والی	ملقیات : پہنچانے والی
ویل : عذاب یا ہلاکت	نجوم : ستارے	فصل : فیصلہ
طمست : ایسے محو کر دی گئی (جس کے آثار بھی باقی نہ رہ جائیں)	عذراً : لوگوں کے بہانے کو ختم کرنے کے لئے	اجلت : جو مہلت دی گئی ہے
فرجت : شگافتہ کر دئے جائیں	نسفت : جڑ سے اکھاڑ دئے جائیں	رسل : رسول (پیغمبر) کی جمع
قنت : مقررہ وقت کو پہنچ جائیں	نذراً : عذاب الہی سے ڈرانے کے لئے	

اَللّٰهُمَّ عَلٰيْكُمْ



فہرست

- (۱) تفسیر
- (۲) خوبصورت ترین پھول
- (۳) صادق آل محمد
- (۴) پیارے نبی (ص)
- (۵) شرف کی کہانی
- (۶) کاجو صحت کا پھل
- (۷) نماز
- (۸) بہترین درس
- (۹) اصحاب کھف کا کتا

جولگ ایران لائے اور انھوں نے نیک اعمال کے ان کے لئے "طوبی" (بہشت) اور بہترین باغشت ہے



جلد-۷، شمارہ-۱ دسمبر ۱۴۳۷ھ

یادگار:

خادم دین و ملت مولانا محمد علی آصفیہ

مجلس ادارت:

مولانا تصدیق حسین صاحب مولانا سعید الحسن صاحب مولانا امیر صغریٰ صاحب

مدیر:

سید منظر صادق زیدی

نائب مدیر: سید محمد سبطین باقری

تلفین و آرائش: imagine

9839099435

سالانہ زراعت: ۳۰۰ روپے

ناشر: ہدی مشن

مونیخ غازی پور ڈاک خانہ گوگوان جلع مظفرنگر

یو پی انڈیا ۲۰۷۷۷۳، فون: 09890500072, 09927754886

برانچ آفس: شفاعت مارکیٹ زہرا کالونی مفتی کچ، لکھنؤ-۳

Mob.: 09415090034, 09451085885

E-mail: tubamonthly@gmail.com

♦ کوربان ♦ اہللبیت (ا.س.) ♦ ہدیہ ♦ اقاوہ ♦ مہدیویہ ♦ اخللاک ♦ مانوہ اہلکار ♦ ہرہ ♦ سواسیہ ♦ ہجہ ♦ رمجان ♦ موہرم..... اور ہش ودهش کی تاجا خبریں ♦ خبروں کا وشللشن ♦ ٹپنی ساکاکار اور ہہو کھ جاننے کے لیل۔

تاریخی رپورٹ

کربلا میں ہزاروں جہازوں کا ہوا

کربلا میں ہزاروں جہازوں کا ہوا

کربلا میں ہزاروں جہازوں کا ہوا

موسم سناچار

کربلا میں ہزاروں جہازوں کا ہوا

کربلا میں ہزاروں جہازوں کا ہوا

کربلا میں ہزاروں جہازوں کا ہوا

ہندوستان

کربلا میں ہزاروں جہازوں کا ہوا

کربلا میں ہزاروں جہازوں کا ہوا

کربلا میں ہزاروں جہازوں کا ہوا

ایران سناچار

کربلا میں ہزاروں جہازوں کا ہوا

کربلا میں ہزاروں جہازوں کا ہوا

کربلا میں ہزاروں جہازوں کا ہوا

اسلامی دیش

کربلا میں ہزاروں جہازوں کا ہوا

کربلا میں ہزاروں جہازوں کا ہوا

کربلا میں ہزاروں جہازوں کا ہوا

ماہنامہ
طوبیٰ

دسمبر ۲۰۱۶ء

